इण्डियन
थिऑसफिस्ट

जून 2023 खण्ड 121 अंक 6

विषयवस्तु

एक पग आगे 189–191
प्रदीप एच. गोहिल

आध्यात्मिक विकास 192–196
टिम बॉयड

जे. कृष्णमूर्ति और थिऑसफी 197–102
रचना श्रीवास्तव

बन्धु सी जिनराजदास की कवितायें 103–106

समाचार और टिप्पणियां 207–218

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच. गोहिल

एक पग आगे

तैयारी को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि ''यह वह कार्य है जिसमें एक ऐसा मानसिक चित्र बनता या उसका प्रतिनिधित्व होता है जो हम आस पास देखते हैं। तब इस चित्र को जो हम देखते हैं उसके बारे में निर्णय लेने के लिये प्रयोग करते हैं। यह पर्यावरण से प्राप्त सूचनाओं को प्राप्त करने और समझनें की प्रक्रिया है।''

अनुभूति की हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। दैनिक जीवन के लिये यह आवश्यक है। अनूभूतियां जिन्हें हम दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं वे अनेक प्रकार की होती हैं, किन्तु दृष्टि अनुभूति बहुत अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें अपने आस पास के संसार को देखनें में सहायता करती है। हमारे आसपास के संसार की अनुभूति लगातार परिवर्तित और विकसित होती रहती है। हम वस्तुओं को कैसे देखते हैं, इसका हमारी क्रियाओं और कार्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपनी अनुभूतियों में सुधार का परिणाम हमारे जीवन में सुधार के रूप में होता है।

अनुभूतियों में सुधार करने की अनेक विधियां हैं जैसे लोक जागरूकता में वृद्धि, संचार कौशल में सुधार, पारदर्शिता में वृद्धि और उत्तरदायित्व पर जोर देना। अनुभूति मानवीय अनुभव में एक महत्वपूर्ण तत्व है। जन्म के क्षण से हम लगातार सीख रहे हैं और बढ़ रहे हैं। आस पास के संसार के बारे में हमारी अनुभूतियां हमें जो पढ़ाया जाता है, हम जो देखते हैं और हमारे अनुभवों से आकार लेती हैं। हम सभी की अद्वितीय व्यक्तिगत अनुभूतियां हैं जो हमें वह बनाती हैं जो हम हैं।

अनुभूतियों का एक बहुत महत्वपूर्ण आयाम यह है कि लोग अपने को कैसे देखते हैं। लोगों की अपनी योग्यताओं, झुकाव, और गुणधर्मों को देखने की विधि को आत्मानुभूति कहते हैं। अपनी पृष्ठभूमि, अनुभव और शिक्षा के स्तर के आधार पर लोगों की भिन्न भिन्न आत्मानुभूतियां होती हैं। यह निर्धारित कर सकती है कि लोग जीवन में कितने सफल हैं। अतः अनुभूतियों की हमारे जीवनों में महत्वपूर्ण भूमिकायें हैं। वे हमारे जीवन में सुधार या पतन ला सकती हैं। यदि हम सोचते हैं कि हमारा जीवन बुरा है तो हम कुछ ऐसा कर सकते हैं जो हमारे जीवन में सुधार लाये। और जब, हम सोचते हैं कि हमारा जीवन अच्छा है तो हम विश्रान्त हो कर आनन्द ले सकते हैं।

अनुभूतियां यह भी प्रभावित करती हैं कि हम अपने आप को कैसे देखते हैं। यदि हम सोचते हैं कि हम किसी प्रकार से बुरे हैं तो हम उसको करनें से बच सकते हैं और यदि हम पाते हैं कि हम किसी मामले में अच्छे हैं तो हम आगे भी वैसा ही करने का प्रयास कर सकते हैं। अनुभूतियां हमारे प्रति दूसरों के दृष्टिकोणों को भी प्रभावित करती हैं। यदि उन्हें अनुभूति होती है कि हम एक अच्छे व्यक्ति हैं तो वे हमारे प्रति भला वर्ताव करेंगे। उल्टा, यदि उन्हें यदि यह अनुभूति होती है कि हम बुरे व्यक्ति हैं तो हमारे प्रति उनका वर्ताव बुरा हो सकता है। अनुभूति हमारे अपने प्रति हमारी प्रतीति को भी प्रभावित करती है। यदि हम सोचते हैं कि हमारा जीवन बुरा है तो हम अवसादित और दुखी प्रतीत कर सकते हैं। और यदि हम पाते हैं हमारा जीवन अच्छा है तो हम जीवन के प्रति प्रसन्नता और संतुष्टि प्रतीत कर सकते हैं। अनुभूतियां हमारे जीवन में बड़ा संघात कर सकती हैं क्यों कि वे निर्धारित करती है कि हम कितने प्रोत्साहित या निराश हैं और इन भावनाओं के कारण क्या क्रिया या आचरण करते हैं।

उचित अनुभूति के लिये यह आवश्यक है कि हमारा मन पूरी तरह स्वतंत्र हो ताकि वह पूरी तरह जागरूक रह सके और कोई सीमा या सीमांत न हो। मन के लिये उस स्थिति को खोज लेना और उस प्रकार स्वतंत्र हो जाना आसान नहीं है। स्वतंत्रता का हासिया दिन प्रति दिन घटता रहता है। वह जिन राजनीतिज्ञों, नेताओं, पुजारी, समाचार पत्रों और पुस्तकों में जो पढ़ते हैं, ज्ञान प्राप्त करते है और जिन विश्वासों से चिपकते है – सभी स्वतंत्रता के मार्जिन को संकरा कर देते हैं। यदि कोई इस सदा चलते रहने वाली प्रक्रिया के प्रति जागरूक हैं और आत्मा के इस संकरेपन के कारण मन की गुलामी को समझ लेता है तो वह जान जाता है कि अनुभूतियों से ऊर्जा आती है। वही ऊर्जा है जो अनुभूतियों से जन्म लेती है और इस छोटे से मन को चूरचूर कर देती है, वह सम्मानित मन जो मंदिर को जाता है, वह मन जो डरा हुआ रहता है। इसलिये अनुभूति सत्य का रास्ता है।

कभी कभी ऐसा हो सकता है कि किसी को अचानक कोई अनुभूति हो जाये, और अनुभूति के उस क्षण उसे कोई समस्या न हो। जिस क्षण उसने समस्या की अनुभूति की है समस्या अचानक रुक गयी है। फिर भी, जब किसी को कोई समस्या है, और वह उसके बारे में सोचता है, उसके साथ वादविवाद करता है, उसके बारे में चिन्ता करता है और विचारों की सीमा के अनुपात में अपने साधनों का प्रयोग करता है, और कहता है, ''मैं और अधिक नहीं कर सकता हूं''।

तुम्हें समझने में सहायता करने वाला कोई नहीं है, कोई गुरु नहीं, कोई पुस्तक नहीं। तुम समस्या में फंस गये हो और उससे निकलने का कोई रास्ता नहीं है। समस्या के बारे में अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूरी तरह से परीक्षण करने के बाद, समस्या को उसके हाल पर छोड़ दिया जाता है। उसका मन अब चिन्तित नहीं होता है, समस्या के बारे में अब आंसू नहीं बहाता है। अब वह और नहीं कहता, ''मुझे उत्तर खोजना चाहिये'' वह शांत हो जाता है। और उस स्तब्धता में उसे एक उत्तर मिलता है। इसका अर्थ हुआ कि मन ने अपनी पूरी सामर्थ्य के अनुसार अपना प्रयास कर लिया है, वह बिना उत्तर पाये सारे विचारों की परिधि पर आ गया है, इसलिये वह शान्त हो गया है – थकावट के कारण नहीं, व्यथित हो कर नहीं और ऐसा कह कर नहीं, ''मैं शांत रहूंगा और उसी से उत्तर मिल जायेगा''। उत्तर पाने के लिये प्रत्येक सम्भव प्रयास करने के पश्चात मन अपने आप शांत हो जाता है। बिना किसी चुनाव के जागरूकता है, किसी मांग के बिना, एक जागरूकता जिसमें कोई नहीं चाहता है और मन की उस स्थिति में अनुभूति होती है। केवल यही अनुभूति है, जो सारी समस्याओं को हल करेगी और यह एक आगे का पग होगा।

———————————————

जिस प्रकार कारण शरीर एक दर्पण है जो वैश्विक मन को परावर्तित करता है, इसी प्रकार बुद्धिक शरीर एक ऐसा दर्पण है जो यूनीवर्सल जीवन की चेतना को परावर्तित करता है, जो अभिव्यक्त संसार में व्याप्त है और जो सारे प्राणियों में भिन्न भिन्न सीमा तक प्रकट हो रहा है। दर्पण जितना अधिक पॉलिश किया हुआ होगा, उतनी ही अधिक पूर्णता से वह यूनीवर्सल चेतना को शुद्ध और समरस मन से परावर्तित करेगा।

आई.के. तैमिनी
''बुद्धि''
द थिऑसफिस्ट, दिसम्बर 2011

टिम बॉयड

आध्यात्मिक विकास

थिऑसफिकल परम्परा में कुछ सार तथ्य हैं। एचपी ब्लैवैत्सकी, थिऑसफिकल सोसाइटी की मुख्य संस्थापक, तीन फंडामेंटल प्रपोजीशनों की बात करती हैं, जिसके लिये हमें प्रोत्साहित किया गया है, न्यूनतम पक्षपात के साथ, समझें और उन्हें जीवन में उतारने का प्रयास करें। ये प्रपोजीशन अब्सोल्यूट के विचार, चक्रों की सार्वभौमिकता और आत्मा की आवश्यक तीर्थयात्रा से सम्बन्धित हैं।

कुछ अन्य भी मूल धारणायें हैं जिनके बारे में हमें अवगत होना चाहिये। उनमें से सारे जीवन का एकत्व, विश्व की और हमारी बहुआयामी प्रकृति, यह विचार कि हम में से प्रत्येक अपने चुनाव और हमारी चेतना की दिशा के लिये उत्तरदायी है। ये सारे सनातन ज्ञान की परम्परा में अन्तर्निहित हैं।

विकास का विचार भी है, आध्यात्मिक विकास, जो डार्विनियन विचार से अलग है। बहुत पहले जे. कृष्णमूर्ति की छोटी सी पुस्तक, ऐट द फीट ऑफ द मास्टर, में किशोर लेखक एक अंतर स्पष्ट करते हैं कि, ''पूरे संसार में केवल दो प्रकार के लोग हैं'' उन्होंने इसको राष्ट्रीयता, लिंग या अन्य किसी प्रकार से जिससे हम लोगों की पहचान करते हैं से नहीं देखा है। दो प्रकार के लोग जिनकी उन्होंने पहचान की है, वे हैं – वे जो जानते हैं और वे जो नहीं जानते हैं। इस कामेंट का महत्व उस ज्ञान की प्रकृति पर है जो मानवता को इन दो भागों में विभाजित करती है। वे इस ज्ञान का विवरण देते हैं वह ज्ञान ''विकास'' है, कि हम विकसित हो रहे हैं, और यह कि हम चैतन्यता से इस विकास में सहभागी हो सकते हैं।

कृष्णमूर्ति रूपों के विकास के बारे में बात नहीं कर रहे थे। प्राकृतिक चयन ही वह इंजिन है जो रूपों के विकास को खींचता है; केवल वह जो सबसे अधिक उपयुक्त है वह प्रकृति की प्रक्रियाओं के लिये चुना जाता है जो बच जाता है और वही प्रजाति को आगे बढ़ाने के लिये प्रयोग की जाती है। यह रूप पर आधारित प्रक्रिया है जिसका चेतना के विकास से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह एक प्रकार से उदासीन है क्योंकि इसका न कोई लक्ष्य है और न कोई दिशा।

जो सनातन ज्ञान परंपरा को मूल्य देते हैं वे रूपों के विकास को मना नहीं करते हैं, किन्तु चेतना के विकास पर फोकस करते हैं। जिस प्रक्रिया से हम गुजर रहे हैं उसके लिये 'एवोल्यूशन' उपयुक्त शब्द है। इसका मूल लैटिन से

आता है, जिसका अर्थ होता है 'खोलना' या 'अनरोल करना'। उस काल में जब अभिलेख स्क्राल्स (लिपटे हुये कागज के मुट्ठे) में लिखे जाते थे, उसे कोई तभी पढ़ सकता था जब उसको खोला जाये या पहले से पूरी तरह लिखा हुआ किन्तु छिपा हुआ था। इस दृष्टिकोण से विकास एक पहले से लिखे हुये आकार को खोलना या अनरोल करना है। यह बीज से मिलता जुलता है जिसमें वृक्ष, फूल और फल सभी बीज के एक छोटे से बिन्दु में छिपा होता है, किन्तु हम उसको देख नहीं सकते हैं क्योंकि उसके दृष्टिगत होने में एक प्रक्रिया सम्मिलित होती है। आध्यात्मिक विकास रूपों के विकास का उल्टा है; आध्यात्मिक विकास में दिशा होती है। यह चेतना में बिखराव से एकत्व की ओर जाने वाली एक गति होती है। या व्यक्तिगत स्व से उसकी ओर जो एकीकृत है, व्यापक है और वैश्विक चेतना है।

इस बिखराव के भाव का मूल क्या है? जैसे एक पत्थर एक पहाड़ी का टुकड़ा है, एक टुकड़ा किसी अन्य वस्तु का भाग है, जिसमें उसके स्रोत के सभी गुण उपस्थित हैं, किन्तु एक सीमा में। हम लोग व्यक्तिगत स्व में टूटे हुये हैं। हमारा अपने व्यक्तित्व पर एकनिष्ठता से केंद्रित होना एक प्रक्रिया है जो एक गहरी प्रक्रिया के प्रति हमें अंधा कर देती है। जैसे ही हमें इसकी कुछ समझ होती है, हम पाते हैं कि हमारा काम व्यक्तित्व के इस क्षेत्र में है, इसकी चाहतों, कामनाओं और विचारों की अलगाववादी प्रवृत्ति की ओर। यदि हम आध्यात्मिक या चेतना आयाम को खोलना चाहते हैं तो यह हमारा दायित्व हो जाता है कि प्रक्रिया को उस दिशा में ले जाने के लिये हमें इसमें कुछ और जोड़ना होगा।

ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति वृक्ष को देखने के लिये जंगल को नहीं देख पाता है। क्योंकि हम स्वयं के एक वृक्ष से बहुत अधिक जुड़ जाते हैं। तो ऐसा क्या है जो हमारे ध्यान को इतना पकड़ कर रखता है कि हम कुछ अन्य जो कहीं अधिक महान है, को देखने में असमर्थ हो जाते हैं, जो सदा वर्तमान रहता है किन्तु हमारे देखने की सामान्य विधि से ओझल रहता है।

पिछले सप्ताह की अवधि में मेरी वार्ता एक ऐसे व्यक्ति से हुयी जो टेक्नालॉजी के कटिंगेज डिजिटल रूप में बहुत क्रियाशील है, एक ऐसी वस्तु जो वर्तमान में समाज को दिशा दे रही है। आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस और इमेजिंग सिस्टम का काम्बीनेशन। यह एक अद्भुत वार्ता थी क्योंकि हमारे विवेचन का एक विषय था 'विकसित होती चेतना'।

उनकी दृष्टि तकनीकी सामर्थ्य पर केन्द्रित थी, जो हमारी सामान्य वास्तविकता

को संवर्धित कर सकती है। जैसे हम अपनी आंखों से देखते हैं, इस समय वास्तविकता को संवर्धित करने के लिये डिजिटल विधियों से अधिक देखने की क्षमता है। इसी प्रकार हम सूचनाओं को वर्धित कर सकते हैं, दृष्टिगत सामग्री को बढ़ा सकते हैं, वास्तविकताओं के स्पर्श योग्य तत्वों को बढ़ा सकते हैं जिस अनुभूति को हम वर्तमान काल में सामान्य रूप से वास्तविकता मानते हैं। वस्तुओं में से एक जिसके बारे में तंत्रिकाविज्ञान नें इंगित किया है यह है कि आदतन हमारी अनुभूति एक संस्कारित प्रतिक्रिया है। मस्तिष्क में एलेक्ट्रिकल कनेक्शनों के एक पैटर्न की कोडिंग होती है। दृष्य चित्र भी एलेक्ट्रिकल इम्पल्स के रूप में अनुभूत होते हैं जो बाद में रंग और वस्तुओं में परिवर्तित होते हैं। किसी एक बिन्दु पर जो है उसकी समझ की साझेदारी होती है जिसे हम सब देख पाते हैं; हरा लाल नहीं है, कार झील नहीं है या घोड़ा नहीं है आदि। और यह वह हो जाता है जिसे हम वास्तविकता कहते हैं और उसी के अनुसार जीवन जीते हैं।

सीधा सा सत्य है कि जब हम जन्म लेते हैं, वह विधि जिससे आंख कार्य करती है, सभी चित्र जो हम देखते हैं, पुपिल से प्रवेश करके रेटिना तक पहुंचनें की राह में उल्टे हो जाते हैं। मूलतः पहले वस्तुयें उल्टी दिखाई पड़ती हैं जिनका मस्तिष्क सुधार करता है और उसे वैसे देखना सीखता है, जैसे हम देखते हैं। बहुत पहले नहीं, जब से मैं हमेशा चश्मा लगाना प्रारम्भ किया उसके पहले, मैंनें कान्टैक्ट लेंस लगाने का प्रयास किया था किन्तु एक समस्या आयी क्यों कि एक आंख दूसरी से कुछ कुछ अलग प्रकार से देखती थी। इसलिये जब दोनों आंखों में बराबर शक्ति का लेंस लगाया गया तो कुछ दूर से तो हमें सब ठीक दिखता था किन्तु मैं पढ़ नहीं पा रहा था या इसका उल्टा। इसका हल यह आया कि दोनो आंखों में अलग अलग शक्ति के लेंस लग गये।

जब हम बहुत दूर देख रहे होते हैं तो मस्तिष्क प्रतिपूरित करता है और एक आंख से संसार को देखने की राह पर भरोसा करता है। जब हम पढ़ रहे होते हैं तब वह पढ़ने की आंखों की दृष्टि से देखने वाले मोड पर आ जाता है। इस प्रकार हम दूर और निकट दोनों को ठीक से देख पाते हैं यद्यपि हम दोनो आंखों के अलग अलग लेंसों से देखते हैं। मस्तिष्क स्वयं एक दुभाषिया का कार्य करता हुआ बताता है कि वास्तविकता क्या है। रास्ते में कुछ बातों पर हम सहमति बनाते हैं और जो इस मान्यता में बहुत आगे चला जाता है उसे समस्या होती है। संसार के रहस्यविदों और सन्तों के साथ यही स्थिति रही है। वे किसी अन्य सत्य को देखते हैं और उसका वर्णन करते हैं किन्तु संसार नहीं मानता है। अतः पूरे इतिहास में इस प्रकार के बहुत से लोग क्रूसीफाई हुये, जला दिये गये,

किनारे कर दिये गये, क्योंकि हम वास्तविकता के बारे में अपने पहले से साझा किये गये विश्वास पर परिवर्तन के साथ नहीं रहेंगे।

इस वार्ता में जो वाद विवाद हो रहे थे कि वास्तविकता का डिजिटल संवर्धन उससे बहुत अलग नहीं है जो हमारे मस्तिष्क में अचेतन रूप से होता रहता है। और उनका मत था कि भारी मात्रा में जो सूचनायें और डाटा हमारे मस्तिष्क में डाला जा रहा है विकास में उत्थान उसका प्रभाव है।

मेरी ओर से, सनातन ज्ञान का परिवेश लेते हुये, मैं कहता हूं, ''हां, यह उत्थान की ओर है'' उसी तरह से जैसे टेलिस्कोप, माइक्रोस्कोप या कम्प्यूटर विकास पर है। हम देख सकते हैं और कर सकते हैं जो हम पहले कभी नहीं कर पाये थे। किन्तु यह समानान्तर है; यह हमारे दृष्टिकोण को उसी स्तर पर विस्तृत करते हैं जहां हम इस समय कार्य करते हैं। यह व्यक्तित्व का चरित्र या उसकी प्रभाविता को परिवर्तित नहीं करती है, न इसमें वह कर पाने की शक्ति है। यह अधिक सूचनायें प्रदान करता है प्रक्रिया, या प्रतिभागिता हेतु और प्रायः उसी में खो जाने हेतु।

द वाइस ऑफ द साइलेंस में एचपीबी कहती हैं कि सीखने के तीन हाल हैं जिनसे होकर एक शिष्य या जिज्ञासु को गुजरना होगा। पहना अज्ञान का हाल है। वह कहती हैं कि यही वह हाल है जिसमें हम पहली बार गहन सम्भावनाओं का प्रकाश देखते हैं, और यह वह भी है जिसमें हम रहेंगे और मरेंगे। हम कुछ और की एक चमक देखते हैं किन्तु जब तक व्यक्तिगत इच्छाओं और विचारों से बंधे रहेंगे, यह वह स्थान है जहां हम लौट कर आयेंगे, जन्म प्रति जन्म।

दूसरा सीखने का हाल है। ऐसा कहा जाता है कि इसमें ''आत्मा जीवन के पुष्प चुनती है'' किन्तु प्रत्येक पुष्प के नीचे ''एक कुंडली मारे हुये सांप'' है। वह कितना भी चित्ताकर्षक क्यों न हो इसकी मादक सुगन्ध को लंबे समय तक सूंघते रहना गलती है क्योंकि यह इंद्रियों की चैतन्यता को जकड़ लेती है।

यहां जो सीखने के लिये पाठ है वह यह है कि रूपों और व्यक्तिपरक वस्तुओं के इस हाल की प्रत्येक वस्तु आन्तरिक रूप से असन्तोषजनक प्रकृति की है, किन्तु यह एक स्तर है जिससे हमें गुजरना ही पड़ता है और यहां जो कुछ भी सीखने योग्य है उसे अवशोषित करना होता है। जो वस्तुयें इंद्रियों को आकर्षित करती हैं या मन को भ्रमित करती हैं उनमें कुछ बुरा नहीं है। प्रस्फुटित होती आत्मा को इस सब के संपर्क में आने की आवश्यकता होती है। किन्तु एक ऐसे बिन्दु पर पहुंचना जहां कोई देख सकता हो कि उस प्रकार के अनुभव गहन

अभिलाषाओं को संतुष्ट कर पाने में असमर्थ हैं और उनसे भ्रमित होना एक मूर्ख व्यक्ति का कार्य है।

संवर्धित वास्तविकता हमारे बच्चों और बच्चों के बच्चों का सामान्य कार्य होगा। ऐसा संसार हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। सतह पर लगता है कि नाटकीय रूप से अलग है, पर क्या यह वास्तव में ऐसा है? किसी ऐसे व्यक्ति के लिये जो चेतना या आत्मा को संवर्धित करने को मूल्य देता है, सारे प्रकरण एक प्रकार के हैं। संवेदों, कामनाओं और विचारों के आच्छादक प्रभाव कैसे कम होंगे? आत्म परिवर्तन में इनको लक्ष्य के रूप में नहीं बल्कि उपकरण के रूप में कैसे प्रयोग करें? आगे आने वाला संसार बिल्कुल ऐसा ही संसार होगा केवल डिजिटलाइज हो जायेगा। मानवीय प्रकृति या सम्भावनायें संसार की परिस्थितियों के बदलनें से नहीं बदलेंगी, जब तक कि यह गहन सम्भावनाओं के लिये प्रक्षेपण मंच नहीं बन जायेगा।

द वाइस ऑफ द साइलेंस में एचपीबी एक कथन कहती हैं कि प्रज्ञावान व्यक्ति सीखने के हाल में अपना गुरु नहीं खोजता है, वहां पायी जाने वाली किसी वस्तु का परिणाम बोधिप्राप्ति नहीं हो सकती है। वे वहां अपना पाठ सीखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं।

(द थिऑसफिस्ट, मई 2023 के सौजन्य से)

> जब कोई व्यक्ति प्रकाशित हो जाता है तब वह भिन्न प्रकार से देखता है; वह जो देखता है वह सत्य है।
>
> .....वास्तविक देखने का अर्थ है कि उसमें प्रिय–अप्रिय नहीं होता है विशेष रूप से जब हम उन लोगों को देखते हैं जिनके साथ हमारा प्रतिदिन संपर्क होता है।
>
> राधा बर्नियर

रचना श्रीवास्तव

जे. कृष्णमूर्ति और थिऑसफी

ऐनी बेसैंट और जे. कृष्णमूर्ति, जिन्हें स्नेह से कृष्णजी कहा जाता था, दो महान सत्य के खोजी थे। वे दोनों ही थिऑसफिकल आदर्शों, जिनका कथन है सत्य सबसे बड़ा धर्म है, से प्रेरित और प्रभावित थे। उनका जीवन सत्य की खोज के लिये इतना समर्पित था कि वे उसके लिये सब कुछ त्याग सकते थे। डा0 बेसेंट की आत्मकथा से यह स्पष्ट होता है कि इसके पहले कि वे थिऑसफिकल सोसाइटी में और भारत आयीं, उन्होंने 'जो सत्य है' उसकी अनुभूति के बारे में कभी समझौता नहीं किया था, भले ही उसका मूल्य उन्हें कुछ भी चुकाना पड़ा हो। उन्होंनें सत्य की ओर बढ़ने के लिये अपने जीवन में निडर हो कर परिवर्तन किये हैं। यही वह गुण था जिसके कारण कृष्णमूर्ति नें प्रो0 पी कृष्णा को उनके प्रश्न कि क्या कारण है कि लोग उनकी शिक्षाओं के सत्य को नहीं समझ पाते है, कहा था, ''यदि अम्मा कुछ कम आयु की होतीं तो समझ लेतीं''।[1]

थिऑसफिकल सोसाइटी की रचना इस मोटो से की गयी थी कि सत्य सबसे बड़ा धर्म है और क्योंकि थिऑसफी नया धर्म नहीं है किन्तु सारे धर्मों का सार है या प्रज्ञा धर्म है, इसकी मांग है कि हम सारे धर्मों और रूपों से ऊपर, शाश्वत सत्य के सम्पर्क में आयें, अब यदि यही थिऑसफी का सार है तो क्या कृष्णमूर्ति हमेशा हमसे यही करने को कहते हैं? वे कहते हैं हम अपने आप को समझें; अपनें संस्कारों से बाहर निकलें। केवल तभी हम सच्ची अनुभूति कर सकेंगे, उसके बिना हम सत्य तक नहीं पहुंच सकते हैं।[2] इसलिये जो थिऑसफी का सार है और जो कृष्णमूर्ति हमारे लिये आवश्यक बताते हैं, उनमें कोई भेद नहीं है। सत्य के बारे में पहले से संस्कारित दृष्टिकोण हमारे मन को स्वतंत्र नहीं होने देते हैं, जिसके महत्व के बारे में कृष्णजी नें अनेक बार कहा है। यह देखने के लिये कि, जब विश्वास बहुत शक्तिशाली होता है तो भ्रान्ति उत्पन्न हो जाती है, हमें पूरी तरह स्वतंत्र होना चाहिये।

बहुत लोग सोचते हैं कि कृष्णमूर्ति मास्टरों के अस्तित्व को मना करते हैं और इसनें उनके और बेसैंट के बीच में एक बडी दरार डाल दी थी और उनके मन में क्षोभ उत्पन्न किया था। कृष्णमूर्ति की आपत्ति केवल 'सुविधाजनक

1. प्रो0 रचना श्रीवास्तव वसन्त कन्या महाविद्यालय की प्रधानाचार्य हैं, जो थिऑसफिकल सोसाइटी के भारतीय सेक्शन के द्वारा संचालित है और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। दि0 17 फरवरी को अडयार दिवस के उपलक्ष्य में जे. कृष्णमूर्ति को श्रद्धांजलि के रूप में यह लेख ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया था।

विश्वास' और सहायता के लिये किसी अन्य पर निर्भरता पर थी। हमें याद रखना चाहिये कि कृष्णमूर्ति नें ईश्वर को मना नहीं किया है, उनकी आपत्ति ईश्वर के बारे में लोगों के द्वारा मानी गयी अनेक प्रकार की धारणाओं के बारे में थी। उन्होनें पवित्र को मना नहीं किया, पवित्रता के बारे में जो लोग समझते हैं उसके बारे में उन्होंनें मना किया है। उन्होने प्रेम को नहीं मना किया बल्कि प्रेम के बारे में जो लोगों के भिन्न भिन्न प्रकार के मत हैं उनके बारे में उनकी आपत्ति थी। उन्होंने धार्मिक मन के बारे में आपत्ति नहीं की किन्तु उन्होंनें धर्म क्या है इसके बारे में लोगों की धारणाओं और विश्वासों के प्रति आपत्ति की। उनके लिये, विचारों द्वारा कल्पित वस्तु का कोई मूल्य नहीं था क्योंकि यह खोज या गहन सत्य को अवरुद्ध कर देता है। उन्होंनें हामी भरी कि सत्य अज्ञात है और उन्होंनें उस तक पहुंचने के लिये असत्य के नकारनें के मार्ग का सुझाव दिया।[3]

ऐनी बेसैन्ट इससे बहुत भिन्न मत की नहीं थीं। वह भी विश्वास करती थीं और कहती थीं कि सोसाइटी से अपेक्षा है कि वह एक जीवंत संगठन हो और कोई जीवास्म (फॉसिल) नहीं, और एक जीवित संगठन उगता है और विकसित होता है और अपने को नयी परिस्थितियों से अनुकूलित करता है। बेसैन्ट के उपर्युक्त कथन से कोई भी देख सकता है कि यह कृष्णामूर्ति के बाद की शिक्षाओं के बीज है।[4] वास्तव में कृष्णजी नें ये कथन ऐनी बेसैंट या किसी अन्य से नहीं लिये हैं, उन्होंने खुद इसकी खोज की थी। उनकी पूरी शिक्षा इस सत्य पर जोर देती है सत्य के ज्ञान में और उस सत्य की समझ में अंतर है। बेसैन्ट और लेडबीटर नें मास्टर से प्राप्त संदेशों के आधार पर उनको मिशन दिया था ताकि वे जगतगुरु के रूप में कार्य कर सकें और तर्कबुद्धीय संसार को धर्म की नयी व्याख्या दे सकें, और उन्होंनें यह कार्य ही पूरे जीवन किया। टी एस की स्थापना तीन मुख्य उद्देश्यों को लेकर हुयी थी जिनमें 'विश्वबंधुत्व' मुख्य था। अन्य दो उद्देश्यों में से एक था 'मानव में अंतर्निहित अदृश्य शक्तियों का अनुसंधान'। प्रायः इन शक्तियों के साइकिक होने का अर्थ निकाला गया है। यद्यपि कृष्णजी ऐसी योग्यताओं से विभूषित थे पर उन्होंनें उन पर फोकस करनें की किसी भी कामना का त्याग किया है, यह समझ कर कि यह एक अन्य बंधन है या सच्ची समझ में बाधा है। उन्होंनें ''चुनावरहित जागरूकता'' और ''पूरा ध्यान देनें'' की स्थितियों की आवश्यकता की पहचान की थी। पूरा ध्यान देने के साधारण कार्य और जागरूक रहनें से कृष्णजी हमें इन क्रियाओं के विशष गुणधर्मों के प्रति विचार करने को बाध्य करते हैं। यह मनुष्यों के गम्भीर परिवर्तन और स्वतंत्रता प्राप्त करनें के कारण बन सकते हैं। पूरे ध्यान से सुनने की क्रिया बुरी आदतें, स्मृतियां

और सारी एकत्रित परंपरायें मिटा देता है। यह संस्कारों को मिटानें में सहायता करता है। कृष्णजी हमें बताते हैं कि जीवन के मार्ग में परिवर्तन 'दूसरों' के लिये नहीं बल्कि अपने ही लिये होता है क्योंकि 'दूसरे' भी तो हम ही हैं। न 'हम' है और न 'वे' है बस 'हम सब' हैं। इतिहास बताता है कि पूरे संसार में करुणा के शिक्षकों नें न किसी विशेष धर्म की शिक्षायें आगे बढ़ाई हैं और न किसी नये धर्म की स्थापना की है। संस्कारों से अपने ही प्रति हिंसा बढ़ती है।

वर्श 1925 के बाद कृष्णजी के स्वर में एक अधिक शक्तिशाली और व्यक्तिगत स्वर स्पंदित होने लगा। 'ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ द ईस्ट' के निरस्त करने के कुछ ही समय बाद उन्होंने कहा कि जो सत्य की खोज करना चाहते हैं वे उस तक किसी संगठन के सहारे नहीं पहुंच सकते हैं क्योंकि संगठन सत्य की प्रकृति की धारणा को पहले से ही संस्कारित करनें का प्रयास करते हैं। उन्होंने वास्तविकता को मार्गहीन घोषित किया और इसनें थिऑसफिकल सोसाइटी में अनेकों में असुविधा उत्पन्न कर दिया, जैसा कि अच्छी तरह से लोग जानते हैं। वर्ष 1929 में जे. कृष्णमूर्ति थिऑसफी से बाहर चले गये और जगतगुरु बनने का विचार समेट लिया। धर्म के बारे में उनका अपना विचार था जो किसी सम्प्रदाय या संकीर्णता से बंधा नहीं था। उनकी शिक्षा का उद्देश्य मानवता को बंधनों से मुक्त करवाना था, जो उसे जाति, सम्प्रदाय, वर्ग, राष्ट्रीयता और परंपराओं और इस प्रकार से मानवता के पूर्वाग्रहों का अन्त किया जा सके।

जो शिक्षा कृष्णमूर्ति नें पायी उससे उन्हें वैचारिक और आत्म विकास की महान स्वतंत्रता मिली। कृष्णमूर्ति नें बेसैन्ट के बारे में 1934 में कहा कि उन्होंनें मुझसे कुछ करने या न करने के लिये कभी कुछ नहीं कहा। पी. कृष्णा कहते हैं कि कृष्णजी में 1929 से 1934 के बीच जो विरोधी भावना आयी थी, वह थिआसफी के सार से किसी आपत्ति के कारण नहीं थी बल्कि थिआसफी एक खोज के रूप में नहीं थी बल्कि यह विश्वासों का एक नया रूप हो गयी थी या ज्ञान का एक नया ढेर हो गयी थी, जिसे लोग केवल मान लेते हैं। उन्होंने उसका खतरा भांप लिया और उसके विरोध में क्रांति कर बैठे, और थिऑसफी को वापस खोज में ले जाना चाहते थे, जिसे वे 'धार्मिक मन' कहते थे 'क्रिश्चियन' या 'हिन्दू' नहीं। केवल एक धार्मिक मन होता है जो प्रेम, करुणा, सत्य, सौंदर्य और अहिंसा से पूर्ण रहता है। कृष्णजी कहते थे ''धार्मिक मन में कोई विश्वास नहीं होता है, इसमें कोई अंधविश्वास नहीं होता है, यह सत्य से सत्य को गति करता है, इसलिये धार्मिक मन एक वैज्ञानिक मन होता है।'' इसलिये एक सच्चा थिऑसफिकल जीवन वह है जो तुम्हें सत्य में विकसित होने देता है और उच्चतर

प्रज्ञान खोजता है।[5]

अब हम उस काल में जाते हैं जब 19 वीं शताब्दी में थिऑसफिकल सोसाइटी की स्थापना हुयी थी। मैडम एचपी ब्लैवैत्सकी नें यह स्पष्ट कर दिया था कि इस प्रकार की सोसाइटी का उद्देश्य आध्यात्मिक जीवन को विशेष रूप से पश्चिमी संसार में वापस लाने की सम्भावना बनाना है, जिसका अर्थ यह भी हुआ कि पूरी मानवता के लिये प्रज्ञान की सम्भावनायें उपलब्ध करवाना। सोसाइटी के सामने चुनौती यह थी और अभी भी है कि मानवता की सहायता करना, जिसका अर्थ है हम में से प्रत्येक को जीवन की भौतिकवादी राह से आगे जाना और शुद्ध मानव के रूप में अपने भाग्य को परिपूर्ण करना। ''शुद्ध'' का अर्थ यहां है कि अपनी पूर्णता में होना जिसमें तनिक भी पाशविक स्वभाव न हो, बिना 'मुझे' या 'मेरा' जो अलगाववादी स्वार्थी मन की उपज हैं।

ब्लैवैत्सकी नें 1888 में अमेरिकन कन्वेन्शन को एक पत्र लिखा था कि आधुनिक सभ्यता का एक झुकाव है कि लोग पाशविक प्रवृत्तियों के बारे में प्रतिक्रियाशील हैं। थिऑसफी मनुष्य में मानवीय प्रकृति विकसित करनें के लिये प्रयत्नशील है। जिस दिन थिऑसफी बंधुवत प्रेम वाले सभी राष्ट्रों के लोगों के ऐसे व्यक्तियों का संगठन बन जायेगा, उस दिन थिऑसफी एक नाम मात्र के बंधुत्व से ऊंचा हो जायेगा। इस महत्वपूर्ण चुनौती को प्राप्त करने के लिये हमें ''मुझे'' का त्याग करना होगा ताकि हम ईमानदारी से एक दूसरे को बंधु कह सकें। एक और सलाह उन्होंनें उसी पत्र में दी है ''कोई थिऑसफी के स्थान पर 'पोपरी' न करे क्योंकि यह आत्मघाती और सदा सबसे अधिक घातक परिणाम लाती है। हम सभी सह–शिक्षार्थी हैं, ... किन्तु थिऑसफिकल सोसाइटी का कोई भी व्यक्ति अपने को शिष्य–शिक्षक से अधिक कुछ न मानें, वह जिसे हठधर्मिता का कोई अधिकार नहीं है।'' यह वास्तव में एक अतिमहत्वपूर्ण सलाह है, क्योंकि वे स्पष्टता से कहती हैं कि आध्यात्मिक प्रकरणों में कोई अथारिटी नहीं होती है, क्योंकि हृदय की पवित्र भूमि में कोई अथारिटी डोग्मा (आधारहीन सिद्धांत) का निर्माण करती है, जो थिऑसफी का विलोम है और यह कि जड़–विचार सोसाइटी में किसी पर न लादे जाये। हम देख सकते हैं कि टीएस मानवता के उत्थान के लिये है, हमारे अन्दर जो मानवीय है उसके विकास के लिये और इसका कभी भी व्यक्तिगत वैभव फैलाने के लिये, अंधविश्वास के सृजन के लिये या जड़वाद के लिये प्रयोग नहीं किया जायेगा।[6]

जब हम कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं को देखते हैं, हम आसानी से देख सकते हैं कि उन्होंनें कभी आध्यात्मिक प्रकरणों में अथारिटी का दावा नहीं किया है।

उल्टा, वे कहते थे, ''मैं अपने आप को एक अथारिटी के रूप में स्थापित नहीं करना चाहता हूं कि मैं कहूं कि तुम्हें क्या करना है, क्योंकि मै आध्यात्मिक मामलों में अथारिटी पर विश्वास नहीं करता हूं। सारी अथारिटी बुरी होती है, और अथारिटी का सारा भाव समाप्त होना चाहिये, विशेष रूप से यदि हमें जानना है कि ईश्वर क्या है, सत्य क्या है, क्या मन की सीमा के बाहर भी कुछ है।'' एचपीबी की तरह कृष्णजी कहते हैं ''इस में कोई शिक्षक नहीं, कोई शिष्य नहीं है, कोई नायक नहीं, कोई गुरु नहीं, कोई मालिक नहीं, कोई रक्षक नहीं है। तुम स्वयं शिक्षक हो और शिष्य हो, तुम्ही मास्टर हो तुम्हीं गुरु हो, तुम्ही नायक हो और सब कुछ हो। समझने का अर्थ है कि जो है उसमें परिवर्तन लाना।'' अपने को समझना पहला पग है, आत्म ज्ञान है जिससे हमें एक दूसरे को समझना है, और इस संसार को समझने के लिये।

एचपीबी ने वॉइस ऑफ द साइलेंस के प्राक्कथन में कहा है जब तक कोई व्यक्ति आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये गम्भीरता से लगातार अभ्यास नहीं करता है, वह आध्यात्मिक शिक्षक की सलाह सुननें के लिये स्वेच्छा से तैयार नहीं होगा। कृष्णजी का पूरा जीवन यह संकेत करने के लिये समर्पित था कि हम क्या हैं और जिस संसार में हम रहते हैं उसकी रचना कैसे की जाती है। कृष्ण जी एक परिवर्तन के बारे में बताते है जिसे हमारे अंदर होने की आवश्यकता है, वे बाहर से संसार को परिवर्तित करनें के लिये चिंतित नहीं हैं।

थिऑसफिकल सोसाइटी के सदस्यों में कृष्णमूर्ति का बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। यद्यपि वे सोसाइटी के सदस्य नहीं थे किंतु वे इसके अंदर एक महान सुधारक सिद्ध हुए हैं, अनेक सदस्यों के ध्यान के केन्द्र परिवर्तित किये हैं, उनसे व्यक्तिगत अनुभव की अथारिटी प्राप्त करके – कुछ ऐसा जिसे बेसैन्ट ने स्वयं अनेक बार करने का प्रयास किया, जैसा कर्नल ऑल्काट को उनके पहले हुआ, किन्तु जिसे कृष्णमूर्ति नयी ऊर्जा के साथ करने में सफल हुये। हमें कोई शंका नहीं है कि कृष्णजी थिऑसफी को जीवन में उतारने के एक जीवंत उदाहरण थे, किन्तु ऐसे जीवन की प्रासंगिकता और सौंदर्य को समझनें की क्षमता सुनने की सामर्थ्य पर निर्भर करती है। जिद्दू कृष्णमूर्ति नें हमें एक बहुमूल्य मणि दिया है। उन्होंनें मानवता को उन सभी समस्याओं को हल करने की कुंजी दी है जो स्वार्थी मन नें निर्मित की हैं, जब वे कहते हैं कि सारी समस्यओं का हल समझना और मन को रोक देना, जो समस्यायें खड़ी करता है और वस्तुओं को पूर्णता में नहीं, खण्डों में देखता है। यह संसार के आंसुओं का उत्तर है जो इसके इस अज्ञान और अंधेरे में एक बार फिर शुद्ध जल के उतरने की प्रतीक्षा करते हुये,

अनगिनत शताब्दियों से दुखी है।

ग्रन्थ सूची

1. पुपुल जयकर, जे. कृष्णमूर्ति; अ बायोग्राफी, गुड़गांव, पेंग्विन, रैण्डम हाउस, 1986
2. पी. कृष्णा, ए जेवेल ऑन अ सिलवर प्लैटर; पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, 2015
3. जे. कृष्णमूर्ति, ऑन एजूकेशन, चेन्नै, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया, 2014
4. जे. कृष्णमूर्ति, ऑन रिलेशनशिप, चेन्नै, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया, 2014
5. जे. कृष्णमूर्ति, ह्वाट आर यू डूइंग विद योर लाइफ, चेन्नै, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया, 2014
6. जे. कृष्णमूर्ति, द फर्स्ट ऐण्ड द लास्ट फ्रीडम, वाराणसी, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया, 2018
7. मैरी ल्यूटन्स, जे. कृष्णमूर्ति; अ बायोग्राफी, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स 2013
8. आर्यैल सनत, द इनर लाइफ ऑफ कृष्णमूर्ति, प्राइवेट पैसन ऐण्ड चेरीनियल विज्डम, वाराणसी, पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, 1999
9. हुघ शियरमैन, माडर्न थिआसफी
10. जे. कृष्णमूर्ति, अ टाइमलेस स्प्रिंग – कृष्णमूर्ति ऐट राजघाट, वाराणसी, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया, 1993
11. जे. कृष्णमूर्ति, टाक्स विद स्टूडेन्ट्स, वाराणसी, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया, 1993
12. द थिऑसफिस्ट, चेन्नै, द थिआसफिकल पब्लिशिंग हाउस, अडयार, मई, 2021

(द थिऑसफिस्ट मई 2023 के सौजन्य से)

संदर्भ

1. पी. कृष्णा, ए जेवेल ऑन अ सिलवर प्लैटर; पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, 2015, पेज 250
2. इबिड. पेज 244
3. इबिड. पेज 251 – 252
4. इबिड. पेज 253
5. इबिड. पेज 247
6. इबिड.

बन्धु सी जिनराजदास द्वारा रचित कवितायें

समस्या

(यह मेरी पहली कविता है – सी जिनराजदास, शिकागो, 1919)

मानव! देखो निज भ्राता को
उचित प्रेम करते हो उसको?
क्या तेरा संसार नहीं है,
सुहृद प्रेम का मंत्र मधुर?

मृत्यु–कष्ट से भी अति कटु है,
घृणा कर रहा है वह तुझको?
तड़प रहा नफरत में जकड़ा,
कभी मुक्त हो सकता है क्या?

हर प्रकरण का कुछ रहस्य है,
सब रहस्य हैं तुम्हें खोजना;
आज नहीं हल कर सकते तो
तुम्हें पड़ेगा विकसित होना!

ईश्वर की रचना को देखो!
क्या यह नहीं सर्व संघर्षण?
सुनों भयंकर अट्टहास को
मृत्यु संग जीवन का नर्तन?

प्रारम्भ और अंत,
प्रेम और द्वेष,
सृजन और विनाश,
संकल्प और भाग्य,

ज्ञान और रहस्य,
मनुष्य और पाषाण,
वर्तमान और भविष्य
ईश्वर के स्वप्न!

फूल

शब्द वही जो सत्य हो, वाणी वह जो दयालु,
सोच वही जो न्यायहित उपजी हिय निस्वार्थ
मदद वही जो उसी क्षण, कष्ट वही टल जाय,
दर्द वही जो छिप रहे खुशी वही बंट जाय।
ये पुष्प हैं जिनको लाया हूं मैं आज यहां पर चुन कर
मुस्काता हूं प्रभु प्राण भरो अपने पवित्र कर कमलों से।

आशा की समाधियों से प्रति दिन फिर आशाओं का जन्म हुआ है।
संकल्प वही जिसकी नजरें होतीं संसार बचाने पर,
जो ईश प्रेम को खोज रहा वह पहले सब से प्रेम करे,
भव कष्टों से जब मुक्ति मिले तो फिर भविष्य के स्वप्न सजे,
ये पुष्प हैं जिनको लाया हूं मैं आज यहां पर चुन कर
मुस्काता हूं प्रभु प्राण भरो अपने पवित्र कर कमलों से।

वहां ऊपर

पदार्थ – जिसकी छाया भी नहीं
सत्य – जो दिखता नहीं
वस्तु – चित्र नहीं
जीवन – स्वप्न नहीं

कारण – परिणाम नहीं
प्रेम – जोड़गांठ नहीं
वृत्त – वृत्त का खंड नहीं
लौ है – पर उसकी चमक नहीं

न प्रतीक्षा न आशा, केवल देखना
कभी न बनना, केवल होना

थका हुआ प्रहरी

(महात्मा के.एच. नें द अकल्ट वर्ल्ड में कहा है, ''थके हुये प्रहरी को
स्थानान्तरित करने के लिये हम सदैव स्वयंसेवक पायेंगे'')

मैं देखता हूं और रक्षा करता हूं, मैं देखता हूं और रक्षा करता हूं
लम्बी रातों में
अपनी तलवार दृढ़ता से पकड़े, मैं वचन देता हूं,
एक सुन्दर युद्ध में।

फिर भी अपनी थकी हुयी आंखों से
मैं बारीकी से आसमान को देखता रहता हूं,
प्रातः फिर कब आयेगी
मम हृदय व्यथा कब जायेगी
जब फिर से प्रातः आयेगी।

अन्य लघु कवितायें
दीर्घ काल से गहन तिमिर में, शुष्क काठ का ढेर रहा मैं,
नहीं किसी को गरज हमारी, नहीं कोई प्रेरक था मेरा
एक दिन एक तड़ित कण आया, छोटी सी चिनगारी लेकर,
मुझे किया स्पर्श, फिर गया, पर तब से मैं सूर्य हो गया।

तेरी त्रुटियां देख चीखते ''यह कचरा है इसे हटाओ''
मैं पखारता उनको मन से, स्वर्ण उसी में मुझको मिलता,
''वह मानव जो पाप कर रहा, ईश्वर है शूली पर बैठा'',
यह मेरा अनुमान नहीं है, गुरुमंडल भी यही बताता।
प्रेम कर रहा है जो मुझको वह अपना प्रेमत्व दे रहा
करें आत्म–श्रृंगार उसी से लेकर पुष्प गन्ध स्वर सुन्दर,
प्रेम कर रहा है जो मुझको वह हमको दिव्याक्ष दे रहा

पढ़ना है यदि भाग्य तुम्हारा, क्या उसनें अभिलेख लिखे है?

युवा काल में तुम्हें मिलेंगे बड़े बड़े सपने मनभावन,
और बुढ़ापे में पाओगे, सूक्ष्म किन्तु गहरे विचार तुम
तुम झूलो सच व मिथ्या में, संत से अधिक देखता बचपन
सी. जिनराजदास
(सौजन्य से – द थिआसफिस्ट, अगस्त 1953, खण्ड 74, अंक 11)

''हम विश्वबन्धुत्व बनाने का दावा नहीं करते हैं
किन्तु उसका एक 'नाभिक' बनाने का करते हैं,
एक कोशिका का बहुत छोटा नाभिक जो कोशिका
के विभाजन और एक नयी कोशिका बनाने के लिये
उत्तरदायी है।

————————————————

''इसलिये तब, विश्वबन्धुत्व का नाभिक बनाने में
हमारा लक्ष्य एक आधारभूत मान्यता के आधार पर
है कि मनुष्य में दिव्य प्रकृति अंतर्निहित है।''

सी जिनराजदास
''यूनीवर्सल ब्रदरहुड''
(समापन भाषण – 74 वां
अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन)
द थिऑसफिकल रिव्यू,
जुलाई 1967

समाचार और टिप्पणियां

बाम्बे

बन्धु जीनू मास्टर का लेख 'क्या जोरोस्ट्रियनिज्म शाकाहार का आदेश देता है?' *जाम ए जमशेद* साप्ताहिक के 2 अप्रैल 2023 के अंक में प्रकाशित हुआ है। जोरोस्ट्रियन प्रार्थना का संदर्भ देते हुये उन्होंनें व्याख्या की है कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जीभ के आनन्द के लिये जीवन हरण दिव्य नियम के प्रतिकूल है। इसलिये शाकाहार पर रहना केवल निर्धारित महीने या अन्य महीनों के चार दिनों में ही नहीं, बल्कि यह जीने की विधि होनी चाहिये।

शान्तिलीन

बन्धु अमुभाई रावल, सेंट्रल और ईस्ट अफ्रीका सेक्शन के अग्रणी थिऑसफिस्ट, जब मुम्बई में रहते थे तब ब्लैवैत्सकी लॉज के सदस्य थे। बहन दीपा कपूर नें उनके शाश्वत प्रकाश में जाने की सूचना दी है। यद्यपि लंदन में निवास करते थे, फिर भी वे ब्लैवैत्सकी लॉज की गतिविधियों के सम्पर्क में रहते थे। हम लोग वास्तव में बहुत भावविभोर हो गये थे जब उन्होंनें यह जानकर कि ब्लैवैत्सकी लॉज के सेवक गनपत के बीमारी के बारे में और उनकी चिकित्सीय सहायता की आवश्यकता के बारे में सुन कर, बन्धु रावल नें मुम्बई में अपनी पहचान के लोगों के माध्यम से डोनेशन भेजा। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शाश्वत शान्ति मिले और टी एस के बन्धुओं को उच्चतर लोकों से प्रेरित करते रहें।

बहन सूनू वेसूना, शांति लॉज की सदस्य 17 अप्रैल 2023 को शांतिलीन हुयीं। यूनिटी यूथ लॉज जीवित रखने और अपने विद्यार्थियों को यूथ लॉज के सदस्य बनने और बीटीएफ की गतिविधियों में भाग लेनें के लिये प्रोत्साहित करने में बड़ा योगदान था। वे अपने विद्यार्थियों को 'रिचुअल ऑफ द मिस्टिक स्टार' में लाती थीं। वे गरीब विद्यार्थियों में थिऑसफिकल मूल्य संवर्धित करनें में बहुत रुचि रखती थीं इसलिये उनका वार्षिक शुल्क भी स्वयं वहन करती थीं। बहन मेहरंगीज बारिया ने लिखा है कि उनकी अपनी वित्तीय सीमायें होते हुये भी वे अपने पड़ोस के गरीब बच्चों को निःशुल्क पढ़ाती थीं। ईश्वर इस समर्पित शिक्षक और दयालु हृदय महिला की आत्मा को शांति प्रदान करे।

बहन परिनाज गांधी, सचिव, टी ओ एस मुम्बई क्षेत्र द्वारा प्रिय बन्धु परवेज गांधी का स्मरणोत्सव मनाया गया। कुछ लोगों के लिये प्रकाश स्तंभ और बहुतों के लिये प्रेरणा रहे बन्धु परवेज गांधी 66 वर्ष की आयु में दि0 28 मार्च 2023 को शांतिलीन हुये थे।

बन्धु परवेज थिऑसफिकल आदर्शों से बचपन से ही प्रभावित थे और स्कूलब्वॉय के रूप में उन्होंने 'लोटस सर्किल' और 'मैत्रेय राउण्ड टेबल' से जुड़ गये थे। 1973 में अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन में भाग लेने के बाद बन्धु परवेज नें टीएस की सदस्यता ले ली थी। उनके यूनिटी यूथ लॉज से सम्बद्धता के काल में उन्होंनें अध्यक्ष सहित विभिन्न पदों पर सेवा की। उसके पश्चात उनकी सदस्यता ब्लैवैत्सकी लॉज को ट्रान्सफर हुयी, जहां वे शांत किन्तु निष्ठापूर्ण सदस्य रहे। इसी बीच उनका प्रोफेसनल उन्नयन गोदरेज ऐन्ड बॉयस मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि0 के मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में हुआ।

वे 48 वर्षों तक टीएस में क्रियाशील व्यवहारिक थिऑसफिस्ट रहे। थिऑसफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस, मुम्बई रीजन के वे प्रकाश स्तंभ और मुख्य संरक्षक रहे। वे निस्वार्थ सेवा, नम्रता, कृपा, और दानवीरता के प्रतीक थे। उनके प्रसन्नता पूर्वक किये गये दयालुता और प्रेम के असंख्य कार्यों के लिये उन्हें याद किया जायेगा।

वे 'राउण्ड टेबल' आन्दोलन में तीव्र रुचि रखते थे जिसमें वे 'लीडिंग नाइट' के रूप में प्रायः आफीसिएट करते थे। उनकी अन्तिम प्रतिभागिता दिसम्बर 2022 की 'क्रिसमस सेरेमनी' में हुयी थी। कैंसर के कारण उनके शरीर की असमर्थता के कारण वे उसके बाद बैठकों में नहीं आ सके फिर भी उन्होंने फरवरी में लिखा था कि वे वर्चुअली मीटिंग अटेंड करेंगे।

हम उस सदा कृतज्ञ करने वाली आत्मा के लिये उच्चलोकों में और अधिक प्रगति की प्रार्थना करते हैं।

गुजरात

दि0 26 फरवरी 2023 को डा0 बाबासाहेब अम्बेडकर हाल नाडियाड जि0 खेड़ा में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस समारोह में एक नये लॉज, सन्तराम लॉज का चार्टर समर्पित किया गया। बन्धु हर्षवर्धन शेठ, अध्यक्ष गुजरात थिऑसफिकल फेडरेशन, उपाध्यक्ष, और बन्धु नरसिहभाई ठाकरिया,

राष्ट्रीय वक्ता, एक्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्यों, बन्धु मनहर भाई पटेल, बन्धु गिरीश नीलगिरि, बन्धु प्रतीक श्रीमाली (गुजरात फेडरेशन की युवा गतिविधियों के चेयरमैन) और बन्धु हितेश पटेल, अध्यक्ष टी.ओ.एस. गुजरात क्षेत्र, ने समारोह में भाग लिया। अन्य प्रतिष्ठित लोग जैसे रेवा लॉज वड़ोदरा के बन्धु ऋतुराज पाण्ड्या, बन्धु हर्षद दवे और बन्धु अतुल दारजी, अहमदाबाद लॉज के प्रतिभागी, पूर्णानन्द लॉज पेटलाड के प्रतिभागी, सनातन लॉज सूरत के प्रतिभागी, और सन्तराम लॉज के नये सदस्य और उनके मित्र और परिवार जनों नें कार्यक्रम में भाग लिया। समारोह का आरम्भ अध्यक्ष द्वारा आहूत यूनीवर्सल प्रार्थना से हुई तत्पश्चात दो हाई स्कूल छात्राओं नें पुष्पों के साथ नृत्य करके प्रतिभागियों का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि और उनके साथ मंच पर बैठे अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सन्तराम लॉज के अध्यक्ष, सचिव और अन्य शुभचिन्तकों के द्वारा शाल, पुष्पगुच्छ और सुगन्धित अगरबत्तियों को अर्पित करके स्वागत किया गया।

बन्धु मनूभाई राठौर, अध्यक्ष, सन्तराम लॉज नें अतिथियों का स्वागत किया। लॉज सचिव बहन मधूबेन मकवाना नें लॉज के निर्माण और उसकी गतिविधियों के सम्बन्ध में अपनी आख्या प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि इस लॉज के प्रारम्भ करने में बन्धु मनहर भाई पटेल, अध्यक्ष पूर्णानन्द लॉज और सचिव बन्धु गिरीश नीलगिरि के दिशानिर्देश और सहायता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

बन्धु हर्षवर्धन शेठ, जीटीएफ अध्यक्ष नें अपने भाषण में लॉज के कार्यकर्ताओं को बधाई दी। उन्होंने अपने भाषण में बताया कि यह दिन अहमदाबाद नगर का स्थापना दिवस भी है। उन्होंने बाबासाहेब अम्बेडकर की उपलब्धियों के बारे में चर्चा की क्यों कि बाबासाहेब अम्बेडकर हाल में कार्यक्रम हो रहा था। इसके पश्चात उन्होंने चार्टर को पढ़ा और उसे सन्तराम लॉज नाडियाड के अध्यक्ष और सचिव को सौंप दिया।

सन्तराम मन्दिर के महन्त नें अपनी लघु वार्ता में बधाई और आशीर्वाद दिया। बन्धु नरसिंहभाई ठाकरिया, नें एकत्रित लोगों को सम्बोधित किया और सन्तराम लॉज को रु 11000/– के डोनेशन का चेक भी हस्तान्तरित किया। उन्होंने रु 2000/– भोजन व्यवस्था के लिये रोकड़ के रूप में दिया।

अन्य वक्ता बन्धु गिरीश नीलगिरि नें लॉज की आगे की गतिविधियों के बारे में चर्चा की। बन्धु जयरामभाई पटेल नें थिऑसफिकल कार्यकर्ता के रूप में कार्य के पूर्व अनुभव साझा किये। बन्धु हर्शद दवे, रेवा लॉज वडोदरा नें ऐनी बेसैन्ट और उनकी थिऑसफिकल जीवन के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत किये। रेवा लॉज के ही बन्धु ऋतुराजभाई पाण्ड्या नें सी डब्ल्यू लेडबीटर के बारे में बताया। बन्धु सूर्यकान्त पटेल, अध्यक्ष पूर्णानन्द लॉज नें एचपीबी के बारे में अपने विचार साझा किये।

तत्पश्चात बन्धु हर्षवधन शेठ नें लॉज सचिव को लॉज पुस्तकालय के लिये कुछ पुस्तकें दिया। उन्होंने नये सदस्यों को डिप्लोमा प्रमाणपत्र भी हस्तांतरित किये। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये और लॉज को सहयोग करने का आश्वासन दिया। अंत में सचिव ने सभी को कार्यक्रम में प्रतिभागिता के लिये धन्यवाद दिया।

कर्नाटक

केटीएफ बैंगलूरु

नवम्बर 2022 में प्रत्येक रविवार और गुरुवार को ऑनलाइन वक्तव्य संचालित किये गये। कार्यक्रमों के लिये सी डब्ल्यू लेडबीटर की पुस्तक टेक्स्टबुक आफ थिऑसफी चुनी गयी थी। बहन पार्वतम्मा नें 6.11.22 को ''लाइफ आफ्टर डेथ'' पर वक्तव्य दिया। बहन के. ऊशा प्रकाश ने ''रिइन्कार्नेशन'' पर, बन्धु वाई. ए. बासुदेव नें ''थिऑसफिकल अध्ययन की प्रतिपूर्ति'' पर, बन्धु वेंकट रेड्डी नें ''जीवन का उद्देश्य'' पर, बहन आर. मदाह्वी नें ''लाइट ऑन द पाथ'' पर, बन्धु एम. रेड्डप्पाचार नें ''लाइट ऑन द पाथ'' पर, बहन ज्योति नागेश नें ''थिऑसफिकल सोसाइटी की स्थापना का महत्व'' पर और बहन सरस्वतम्मा ने 'लाइट ऑन द पाथ के सिद्धांत'' विषय पर वार्ता की।

हुलियार लॉज नें रविवार और गुरुवार को छोड़ कर सप्ताह के सभी दिनों में ऑनलाइन वक्तव्य संचालित किये। इस विशेष कार्यक्रम में बन्धु एम.आर. गोपाल, बन्धु एच.सी. जगदीश, बन्धु राघवेन्द्राचार और बहन इन्दिरास्वामी विशेष रूप से क्रियाशील रहे। बन्धु एम.आर. गोपाल नें ''टीएस के संस्थापकों'' के विषय पर दिन का कार्यक्रम किया।

बहन वाणी वासुदेव नें बैंगलूरु सिटी लॉज में दि0 6.11.22 को

''राजयोग'' पर वक्तव्य दिया। इसके अतिरिक्त नवम्बर में बन्धु दक्षिणामूर्ति नें ''भारतीय तत्व दर्शन'' पर, बहन शशिकला नें 'थिऑसफिकल सोसाइटी के स्थापना दिवस'' पर और बन्धु रेड्डप्पाचार नें ''ऐनी बेसैन्ट और टी.ओ.एस.'' पर वक्तव्य दिये।

दि0 5.11.22 को बहन इन्दिरास्वामी नें विजयनगर, बैंगलूरु लॉज में ''बहन राधा बर्नियर का जीवन और उनके सन्देश'' विषय पर एक वक्तव्य दिया। दि0 12.11.22 को बन्धु एम. एस. श्रीधर ने ''क्रियेटिव साइलेंस'' विषय पर एक वक्तव्य दिया। बन्धु एम.एस. श्रीधर चक्रभावी नें ''संस्कृति और उसका संदेश'' विषय पर वार्ता की।

दिसम्बर 22 में मल्लेश्वरम्, बैंगलूरु लॉज में बहन पुतम्मा नें ''पावर ऑफ थाट'' विषय पर तीन वक्तव्य दिये। बन्धु श्रीनिवास और बन्धु लक्ष्मीश नें क्रमशः ''विवेक'' और ''व्यवहारिक थिऑसफी'' विषयों पर वार्तायें कीं।

बन्धु राज शिव शंकर नें सत्यकाम लॉज श्रीनिवासपुरा में 6.11.22 को एक अध्ययन कैंप संचालित किया। इस अवसर पर बहन रत्नकारा माधवी नें ''एचपीबी और कर्नल एच.एस. ऑल्काट'' विषय पर वार्ता की। बन्धु ए. वेंकट रेड्डी ''इनर गवर्नमेंट'' पर अपने विचार व्यक्त किये। बन्धु वीरब्रमैया नें एकत्रित लोगों का स्वागत किया और बन्धु हनुमतप्पा नें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

बन्धु एम.ए. वेंकटस्वामी नें बोदिम्पल्ली (कोनाकुन्टलु) में एक दिन का अध्ययन शिविर संचालित किया। इस अवसर पर बहन शोभा नें ''ऐनी बेसैन्ट का जीवन'' विषय पर अपने विचार प्रकट किये। बन्धु सोन्नप्पा रेड्डी ''लाइफ इज फॉर लिविंग'' विषय पर पर बोले। बन्धु वेंकटस्वामी नें ''सीक्रेट प्रिंसिपल्स ऑफ लाइफ'' विषय पर वक्तव्य दिया।

बहन जी.एस. ललिता नटराज के निर्देशों पर 19 से 20 नवम्बर 2022 की अवधि में बंगारपेट में एक थिऑसफिकल मीट का संचालन किया गया। निदेशक नें ''भजगोविन्दम् ऑफ शंकराचार्य'' पर वार्तायें कीं। बन्धु नटराज नें थिऑसफिकल सोसाइटी की स्थापना दिवस के बारे में चर्चा की। मीट का आयोजन बहन रामा श्रीनिवास गुप्त की स्मृति में किया गया।

बन्धु धनंजय नें 5 नवम्बर 2022 को कोट्टूरु में राधा जी के बारे में चर्चा की। अन्य वक्तव्य जो नवम्बर में उसी स्थान पर आयोजित हुये वे थे – बन्धु

चन्द्रन्ना नें ''आध्यात्म सिंधु'' विषय पर, बन्धु कोत्नप्पू नें ''थिऑसफी की समृद्धि'' विषय पर, बन्धु सिद्धनानेश नें ''भगवद्गीता, ईश्वर धर्म और आधुनिकता'' विषय पर चर्चा की। बहन अनुराधा नें ''भगवद्गीता'' और बन्धु मुरली धर नें ''शैव के वचनों में भक्ति और ज्ञान'' विषय पर चर्चा की।

दि0 6 नवम्बर 2022 को देवनगिरि में एक अध्ययन शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें बन्धु चन्द्रशेखर नें ''वचनों में जीवन का मूल्य'' चर्चायें कीं। इसके अतिरिक्त बन्धु आदिकेशव प्रसाद नें विश्वबन्धुत्व पर वार्ता की। दि0 13 नवंबर को बन्धु नागनगौड़ा ने, ''सुखान्वेशणे द ब्लिस'' विषय पर चर्चा की।

एक सेवा निवृत्त न्यायाधीश बन्धु एच. बिल्लप्पा दि0 20.11.22 को होसदुर्ग में एक अध्ययन कैंप संचालित किया जिसमें उन्होंने ''थिओसाफिकल सोसाइटी की स्थापना'' के बारे में वक्तव्य दिये। इसके अतिरिक्त बन्धु एच.सी. नारायणप्पा नें इसी अवसर पर ''रिइन्कार्नेशन'' पर वक्तव्य दिया। डा0 पवनकुमार नें एक व्याख्यान ''आयुर्वेद के सार में आध्यात्मिकता की प्राप्ति'' शिविर निर्देशक बन्धु बिल्लप्पा नें ''लोक साहित्य में आध्यात्मिकता'' विषय पर वक्तव्य दिया।

बन्धु एस.एम. उमाकान्त राव नें दि0 30 नवम्बर को एक अध्ययन शिविर का आयोजन किया। बहन पार्वतम्मा, बन्धु के. शिवलिंगैया, बन्धु एस.यू. महेश नें इस शिविर में भाग लिया जिसका आयोजन विशेष रूप से टी.ओ.एस. पर किया गया था। ''टी.ओ.एस. के कार्यक्रम कैसे आयोजित किये जायें जिससे कि हम गरीबों और जरूरतमंद लोगों तक पहुंच सकें'' विशेष विवेचन हुआ।

यू.पी. और उत्तराखण्ड

धर्मलॉज लखनऊ में दि0 5 और 19 अप्रैल को बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें क्रमशः ''जैनिज्म'' और ''डिवाइन प्लान और टीएस'' विषयों पर वार्तायें कीं। बन्धु प्रमिल द्विवेदी नें पुस्तक 'मैन ऐण्ड हिज बाडीज' से 'भौतिक शरीर' अध्याय का अध्ययन संचालित किया। इसके अतिरिक्त बन्धु बी.के. पाण्डेय नें सी. जिनराजदास की पुस्तक 'आई प्रामिज' से 'ब्लिसफुल थाट' अध्याय पर क्रमशः 12 और 26 अप्रैल को अध्ययन संचालित किया।

सत्यमार्ग लॉज लखनऊ में दि0 2 अप्रैल को ''अध्यात्म के मार्ग'' विषय पर एक अध्ययन शिविर आयोजित किया। कर्म मार्ग, भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग पर

क्रमशः बन्धु विजय गुप्ता, बन्धु अरुणेश कुमार और बन्धु एस.के. पाण्डेय नें व्याख्यान दिये। इन वक्तव्यों के बाद अनेक प्रश्नोत्तर हुये। इस शिविर में लगभग 45 लोगों ने भाग लिया जिनमें लखनऊ के लॉजों के सदस्य और कुछ सदस्यों के अतिरिक्त लोग भी थे।

प्रज्ञा लॉज लखनऊ के सदस्यों ने दि0 2 अप्रैल को सत्यमार्ग लॉज द्वारा आयोजित अध्ययन शिविर में भाग लिया। दि0 16 और 30 अप्रैल को सत्यमार्ग लॉज में बहन वासुमती अग्निहोत्री नें 'ऐट द फीट ऑफ मास्टर' पर अध्ययन संचालित किये।

निर्वाण लॉज आगरा में 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम', 'जीवन में वेद' और 'च्यवन' (दिव्य प्रेरित व्यक्ति) पर क्रमशः एच.वी. पाण्डेय, बहन राखी सिंह और बन्धु सी.आर. रावत नें वार्तायें कीं। 'ईश्वर की रूपरेखा' विषय पर 20 अप्रैल को एक सिम्पोजियम आयोजित किया गया।

सर्वहितकारी लॉज गोरखपुर की बैठकें 2, 12 और 19 अप्रैल को हुयीं जिनमें बन्धु ए.के. श्रीवास्तव नें 'भारतीय दर्शन में ईश्वर की धारणा' पर, बन्धु एस. बी.आर. मिश्रा नें 'सांख्य दर्शन और थिऑसफी' पर और बन्धु अजय राय नें 'न्याय दर्शन और बुद्धिज्म' पर व्याख्यान दिये। दि0 26 अप्रैल को बहन शशी, पी. एम.सी. हैदराबाद नें 'मेडीटेशन' पर एक लघु वार्ता की जिसके बाद ध्यान का अभ्यास करवाया। उसके बाद 'अद्वैत' विषय पर एक वार्ता बन्धु वी. द्विवेदी नें प्रस्तुत की। लॉज द्वारा दि0 30 अप्रैल को पुस्तक 'सात महान धर्म' पर एक सेमीनार आयोजित किया गया। बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें 'क्रिश्चियनिटी और बुद्धिज्म' पर, बन्धु ए.पी. श्रीवास्तव नें 'इस्लाम और जोरोस्टियनिज्म' पर, बन्धु अजय राय नें 'जैनिज्म और डिवाइन विज्डम' पर, बन्धु वी. द्विवेदी नें 'हिन्दुइज्म' पर और बन्धु एल.एस. शुक्ल नें 'सिक्खिज्म' पर वार्तायें कीं।

प्रयास लॉज गोरखपुर में बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें दि0 8, 9, 16 और 30 अप्रैल को 'एड्रेस टू न्यू मेम्बर्स ऑफ टीएस' नामक पुस्तक का अध्ययन संचालित किया।

नोयडा लॉज, नोयडा में 2 अप्रैल को डा0 जी एस अरन्डेल की पुस्तक 'निर्वाण' पर अध्ययन के लिये लिया गया।

चोहान लॉज कानपुर में दि0 2 अप्रैल को 'आध्यात्मिक जीवन की

विशेषतायें भाग 2' पर, दि0 9 अप्रैल को बन्धु आर एल गुप्ता नें 'पाइथागोरस का जीवन और उनकी शिक्षायें' पर और दि0 13 अप्रैल को बन्धु एस.एस. गौतम नें 'एच.पी. ब्लैवैत्सकी का जीवन और उनकी शिक्षायें' विषय पर वार्ता की।

चोहान लॉज द्वारा दि0 14 और 16 अप्रैल को एक अध्ययन शिविर आयोजित किया गया जिसमें बन्धु एस.के. पांण्डेय नें जे. कृष्णमूर्ति की पुस्तक 'फ्रीडम फ्रॉम नोन' पर अध्ययन संचालित किया। लॉज नें दि0 23 को 'कर्म भाग्य और पुनर्जन्म पर एक परिचर्चा आयोजित की जिसमें 9 बाहरी व्यक्तियों के साथ 32 प्रतिभागी थे। बन्धु शिवबरन सिंह, बन्धु के.के. श्रीवास्तव, बन्धु रोहित ब्रजपुरिया, बन्धु एस.एस. गौतम और बन्धु एस.के. पाण्डेय नें मुख्य विचार बिन्दु पर अपने अपने विचार रखे।

आनन्द लॉज प्रयागराज में बन्धु सुदीप मिश्रा और बन्धु के.के. जायसवाल क्रमशः 2 और 13 अप्रैल को वार्तायें कीं। दि0 9 अप्रैल को लॉज के एक्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्यों की बैठक हुयी।

काशी तत्व सभा, वाराणसी की वार्षिक सामान्य सभा दि 28 अप्रैल को संचालित हुयी जिसमें बन्धु डा0 कुमुद रंजन, बहन अन्नपूर्णा और बन्धु ए.एन. सिंह क्रमशः अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष चुने गये। बहन भारती चट्टोपाध्याय और बन्धु ओम प्रकाश यादव को सचिव के रूप में चुना गया।

फेडरेशन अध्यक्ष बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें दि0 23 फरवरी को आनन्द लॉज गाजियाबाद का दौरा किया और लॉज के कार्यकर्ताओं के साथ कुछ प्रशासनिक प्रकरणों पर चर्चा की। बन्धु पाण्डेय नें उसी दिन आयोजित लॉज की बैठक में 'अकल्ट फंक्शन्स आफ सम ह्यूमन ऑर्गन्स ऐन्ड देयर करेस्पांडेंसेज' विषय पर एक वक्तव्य दिया। उसके पश्चात उन्होंने मेडीटेशन सत्र भी संचालित किया।

बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें 1 और 15 अप्रैल को ब्रह्मविद्या लॉज ग्राम जिगना (जिला गोरखपुर) में क्रमशः 'थिआसफिकल सोसाइटी का इतिहास' और 'ध्यान' विषयों पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त बन्धु मिश्रा ने दि0 15 अप्रैल को एक ध्यान सत्र का निर्देशन किया।

ऐनी बेसैंट लॉज वाराणसी में 23 अप्रैल को 'भगवद्गीता बाई ऐनी बेसैन्ट और भगवान दास; इसका मूल, महत्व और वर्तमान संसार में इसकी प्रासंगिकता' पर एक अंतरंग सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बनारस हिन्दू

विश्वविद्यालय के दर्शन और धर्म विभाग के विद्वानों ने भाग लिया। जिन बिन्दुओं पर विवेचन हुये वे इस प्रकार थे – (1) गीता का निर्माण और संरचना, (2) इसे भारत के स्वतंत्रता में बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, तिलक और महात्मा गांधी द्वारा कैसे प्रयोग किया गया, (3) महान दूरदृष्टि के लोगों द्वारा इसे कैसे प्रयोग किया गया और (4) पूरे जीवन के लिये एक व्यक्तिगत गाइड। इस संबंध में बालगंगाधर तिलक का एक कथन है, ''गीता की सर्वाधिक व्यावहारिक शिक्षा यह है, जिसके कारण यह संसार के लोगों के लिये सर्वाधिक रोचक और मूल्यवान है। मनुष्य के लिये संसार एक संघर्षों की श्रृंखला है। गीता से सीखना है जब कर्तव्य दृढ़ता और साहस की मांग कर रहा हो उस समय कोई अस्वस्थ भावना प्रवेश न कर सके। और यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत का प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चा गीता का यह सन्देश समझता है।'' इस अनुच्छेद को उद्धरित किया गया और इस पर विवेचन किया गया था।

'चतुर्भुज लॉज' के नाम से एक नये लॉज, का सृजन पोस्ट ग्रेजुएट कालेज बंसगांव जि0 गोरखपुर के संकाय सदस्यों ने किया है। इस लॉज के चार्टर के लिये प्रार्थना पत्र भारतीय सेक्शन को सौंप दिया गया है। इस लॉज की पहली बैठक दि0 5 अप्रैल को हुयी जिसमें बन्धु एस.बी.आर मिश्रा नें 'थिऑसफी का परिचय' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

भारतीय सेक्शन के कार्यों / कार्यक्रमों में योगदान

बन्धु एस. एस. गौतम नें भारतीय सेक्शन की पत्रिका 'द इंडियन थिऑसफिस्ट' मई 2023 का हिन्दी में अनुवाद किया।

बहन सुव्रलीना मोहन्ती नें निम्न कार्यक्रमों का मॉडरेशन किया –

1. दि0 2, 9 और 16 अप्रैल को 'थिऑसफी की व्याख्या – अध्याय 1 भाग 1 से 3' तीन सत्रों में।
2. दि0 23 अप्रैल को 'प्रो0 चिन्तामणि, एक सच्चे थिआसफिस्ट'
3. दि0 30 अप्रैल को 'सीक्रेट डॉक्ट्रीन का अध्ययन – क्यों और कैसे'

बहन सुव्रलीना मोहन्ती नें बहन प्रान्सी मोहन्ता के साथ भारतीय सेक्शन

के प्रस्तावित क्वार्टली ई न्यूज लेटर के तैयारी का कार्य किया।

राष्ट्रीय वक्ता

शंकर लॉज दिल्ली के आमंत्रण पर, बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें 1 अप्रैल को 'सीक्रेट डाक्ट्रीन को कैसे पढ़ें' विषय पर एक वक्तव्य ऑन लाइन दिया। बन्धु एस.के. पांडेय नें दि0 29 अप्रैल को 'ज्ञान योग और उसे प्राप्त करने की विधि' पर ऑनलाइन वक्तव्य दिया।

बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें 30 अप्रैल को 'सीक्रेट डाक्ट्रीन का अध्ययन – क्यों और कैसे' पर वक्तव्य दिया।

दि0 11 से 15 अप्रैल की अवधि में अडयार में एक 'थिऑसाफिकल वर्कर्स कैम्प' आयोजित हुआ था जिसका निर्देशन बन्धु सी.ए. शिन्दे और बन्धु यू.एस. पाण्डेय ने संयुक्त रूप से किया। बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें भी 12 अप्रैल को 'महात्मा लेटर्स – एम्फैसिस ऑन महाचोहान्स लेटर' पर इस कार्यक्रम में एक वक्तव्य दिया था। बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें 11 से 15 अप्रैल तक प्रतिभागियों को गाइडेड मेडीटेशन करवाया।

बहन सुव्रलीना मोहन्ती नें दि0 16 अप्रैल को 'सदाचार' विषय पर एक ऑनलाइन वक्तव्य दिया।

बहन विभा सक्सेना नें 30 अप्रैल को 'नेचर ऑफ मेमोरी' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

अन्य मंचों पर योगदान

शाश्वत योग सभा और पी.एम.सी. गुजरात ने दि0 6 अप्रैल को बन्धु यू. एस. पाण्डेय का 'पुनर्जन्म' पर एक ऑन लाइन पब्लिक व्याख्यान आयोजित किया। इस वक्तव्य में बन्धु पाण्डेय नें कालचक्र, मानव आत्मा की प्रगति के लिये मृत्यु और पुनर्जन्म की आवश्यकता, एक जीवन चक्र की विभिन्न अवस्थायें – भौतिक जीवन, मृत्यु, मृत्यु की प्रक्रिया, कामलोक और देवाचन को आत्मा की यात्रा और अतिरिक्त अनुभव के लिये पुनः भौतिक जीवन में वापसी, सिद्ध या अडेप्ट बन जाना मानव जीवन का लक्ष्य, आदि।

व्याख्यान के बाद अंतरंग प्रश्नोत्तर हुये जिसमें अनेक लोगों के प्रश्नों के उत्तर दिये गये। प्रतिभागियों ने वार्ता में प्रस्तुत किये तथ्यों की प्रशंसा की और

डा0 रंजन ने वक्ता को धन्यवाद दिया।

शांतिलीन

बन्धु शिवकुमार श्रीवास्तव (डिप्लोमा सं0 64423), आनन्द लॉज, प्रयागराज, 16 अप्रैल 2023 को शांतिलीन हुये। दि0 23 अप्रैल 2023 को बन्धु श्रीवास्तव को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये आनन्द लॉज में एक विशेष बैठक हुयी।

बन्धु प्रकाश गुप्ता (डिप्लोमा सं0 70572), काशी तत्व सभा, वाराणसी, दि0 18 अप्रैल को शांतिलीन हुये।

भोवाली अध्ययन कैम्प

'ब्रह्मविद्या विद्या नी कुंजी' (की टू थिऑसफी का गुजराती अनुवाद) पुस्तक पर एक अध्ययन शिविर भोवाली में दि0 25 अप्रैल से 2 मई 2023 की अवधि में संचालित किया गया। यह अध्ययन गुजरात थिऑसफिकल फेडरेशन के तत्वाधान में संचालित हुआ था जिसमें बाम्बे थिऑसफिकल फेडरेशन भी सम्मिलित हुआ।

अध्ययन कार्यक्रम भारतीय सेक्शन के भवन में संचालित हुआ जिसे 'हिमालयन स्टडी सेंटर' कहते हैं जो भोवाली जि0 नैनीताल उ0प्र0 में स्थित है। कुल मिला कर 29 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। सूरत से 4 प्रतिभागी थे, वडोदरा से 1, हिम्मतनगर से 1, और 21 अहमदाबाद से। इनके अतिरिक्त दो प्रतिभागी बी.टी. एफ. मुम्बई से थे।

इस कार्यक्रम के रिसोर्स परसन जीटीएफ अध्यक्ष बन्धु हर्षवर्धन शेठ, राष्ट्रीय वक्ता बन्धु नरसिंह ठाकरिया और बीटीएफ अध्यक्ष बन्धु विनायक पाण्ड्या थे। की टू थिऑसफी पर गुजराती में अध्ययन संचालित हुआ। प्रतिदिन एक एक घंटे के 6 सत्र संचालित हुये – प्रतिदिन तीन प्रातः कालीन और तीन सायंकालीन सत्र। बन्धु छबीलदास के. सोनी, सचिव, गुजरात थिऑसफिकल फेडरेशन नें प्रतिदिन ध्यान करवाया। देर संध्या में प्रतिभागियों ने भजन, गीत, प्रहसन, कवितापाठ आदि भी आयोजित हुये।

कुल मिला कर बन्धु हर्षवर्धन शेठ, बन्धु नरसिंह ठाकरिया और बन्धु

विनायक पाण्ड्या के निर्देशन में, प्रतिभागियों के लिये यह सीखने का एक महान अनुभव रहा। सुरम्य परिवेश में ज्ञान की यह सहभागिता प्रतिभागियों के लिये बहुत फलदायी रही।

बन्धु छबीलदास के. सोनी नें भारत समाज पूजा भी संचालित की जिसका प्रतिभागियों नें बहुत स्वागत किया। प्रतिभागियों को लगा कि अध्ययन के लिये 5 दिन का समय बहुत कम था।

भोवाली में व्यवस्थायें जो भारतीय सेक्शन के कोषाध्यक्ष बन्धु वी. नारायनन के निर्देशन में हुआ था वह अति उत्तम था। बन्धु विनोद को वाराणसी से प्रतिभागियों की आवश्यकताओं की व्यवस्था के लिये भेजा गया था। उनको श्री गंगा सिंह और उनके दल द्वारा भोजन और गृह व्यवस्था में पूरा सहयोग मिला।